9,4. स पृंशिवों प्राविशृतं वृंक्स्पतिरूम्यंगृह्णात् 2,1,3,4. Etwas in Emplang nehmen: केावरमभित्रमारु दिव्यमस्त्रम् MBB. 3,1705. — 2) ansetzen (Blüthen, Früchte): यदमस्पतयः u. s. w. स्वे स्वे काले र्राभगृह्णात् पुष्पाणा च पालानि च BBAG. P. 3,29,44. — 3) zusammenlegen (die Hände): स्राभगृह्णीतपाणि: BBAG. P. 1,19,12. — 4) Jmd empfangen: स्राभित्रमारु सीमित्रिर्विनयोभी पतित्रिभि: MBB. 3,16430. — caus. fangen, ertappen oder sich ertappen lassen: द्वपाभिमान्तित auf der That ertappt (ein Dieb) DAGAK. 115,4. — Vgl. स्रभिम्न fg.

— श्रव 1) loslassen, nachlassen: दासित दिल्लाम्बगृह्णीयात् (र्श्मीत्) Lâti. 2, 8, 13. — 2) zertheilen Suça. 1, 101, 13. in der Grammat. absetzen, abtheilen (Wörter oder Worttheile): देवनीयं शंसति पदावयाहम् Ait. Ba. 6, 35. 2, 19. Çâñah. Ça. 10,6, 4. 18, 9, 6. पितृपापाम् । श्रत्र हि पितृ । पापामित्पृकार्ग ऽवगृन्ति P. 8, 4, 26, Sch. — 3) श्रवगृन्त्र पादाभ्याम् Suça. 1, 101, 5 bedeutet wohl die Füsse spreizend, sich mit den Füssen anstemmend; daher wohl श्रवगृन्ता sich gegen Etwas stemmend, mit Gewalt: न महानवगृन्त्र (Sch.: = निगृन्त्र) साध्यः Çıç. 5, 49. — 4) unterscheiden Suça. 1, 112, 16. — Vgl. श्रवयह १९८०, श्रवगृन्त्र. — caus.: zu einem Teig zerrühren (?): मर्दिता समिता तीर्नार्किल्यृतादिभिः । श्रवयान्त्र Riéav. im ÇKDa. u. घृतपूर्.

— प्रत्यव zurücknehmen, widerrufen: श्रभिसृद्याभिषेकं ते पुन: प्रत्यव-गृह्मता R. Gorn. 2,20, 15.

— व्यव niederbeugen: म्रय पद्वत्तर् (कपालं) सा ग्यास्तद्यवगृक्तिता-त्तामिव भवति व्यवगृक्तितानेव क् ग्याः Çat. Ba. 7,8,1,2.

— घा anfassen, anhalten: घा ते टूता वेचापुजा रूरी गृभ्णो १. v. 8,45, 39. घा गृह्णीतुं मं वृह्तं प्राणापानान् A v. 11,9,11. anziehen: तेन खागृ- खातामभीपव: Çîx. 6,15, v. l. — Vgl. घायक्.

— उपा umarmen R. GORR. 2,95,9. — Vgl. उपाग्रहणा.

— समा ergreisen, aus einmal ersassen: समार्गभाष वसु भूरि पुष्टम् AV. 18,2,60. स्रा तू ने इन्ह तुमर्त्रा चित्रं याभं सं गृभाष । मुकाकुस्ती इतिणिन ॥ प़ V. 8,70,1.

— उद् 1) ausheben, herausnehmen: वाङ्क ÇAT. Ba. 5,4,1,15. सुर्चम् TS. 6,2,9,3. Kâtj. Çr. 4,14,13. त्यानि 5,3,8. 8,4,2. Çat. Br. 6,3,1,4. शक्तिं चायामुर्यकृति Вилтт. 15, 52. उद्गकृतितालकात्ताः Мвси. 8. — 2) aufrichten, erheben, emporbringen; med. sich aufrichten, sich erheben: वार्जस्य मा प्रसुव उद्धानेणोर्दयभीत् vs.17,63. ब्रह्मणीवात्मीनमृहह्माति ब्र-ह्मणा भ्रात्व्यं निगृह्णाति TS. 5,4.6,6. उड्ग्मणीते वा रूपा उस्मालोक्तादे-वलाकमि ÇAT. Ba. 3,1,4,1. देवा म्रात्मानमस्मालोकातस्वर्ग लोकमभ्य-হান্ধন 6,6,1,12. — 3) herausgreifen, herausziehen, wegnehmen: ত্র-मुङ्ख्य MBn. 7,7880. उर्द्यमं परिपानीखातुधानेम् Av. 4,20,8. उङ्खीव प-ज्ञियां तनूम् ÇAT. BB. 3,2,2,20. ताभ्याः ज्यातिकृदंगृह्णात् TBB. 1,1,5,4. ਤੁ-परीवाग्रिम्ईक्षीपाडुडर्न् ebend. — 4) herausreissen, erretten: उर्देन भ-गी ग्रमीत् AV. 8,1,2.17. — 5) aufhören, namentl. aufhören zu regnen (vgl. म्रवप्रक्, म्रवप्राक्)ः मर्वपोर्विर्पम्ड पूर्गभाष RV. 5,83,10. पद्-ष्ट्रीइह्माति तडेनतस्य ÇAT. Ba. 2,2,3,8. VS. 22,26. TS. 7,5,11,2. AV. 9, 6,47. KHAND. Up. 2,3,2. absetzen im Reden: तिस्यायास्त्रि कह्माति Lâti. 7,12,3. — Vgl. उद्गमण fgg. — caus. 1) auszuzahlen veranlassen: (स-भिकाः) जितम्हाक्येक्जेत्रे Jién. 2,200. — 2) erheben, lobend hervorheben: विशेषविद्वपः शास्त्रं यत्तवेद्वाताते पुरः Çıç. २, ७३. माङ्गिप्रकः स्नीतानि

Внатт. 13, 20. उद्घाहित = उपन्यस्त Н. ап. 4, 102. Vaié. beim Sch. zu Çiç. 2,75. = उरीर्ष Мер. t. 180. — 3) उद्घाहित = माहित Н. ап. Мер. — 4) उद्घाहित = वद्घ gebunden diess.

- उपाद् aufrichten: म्रविसक्तायाः सव्येन पाणिनाञ्चलिमुपेाहृक्य Gobb. 2,2,16. तस्या रू मुखमुपेाहृह्मनुवाच Кылы. Up. 4,2,4.

— प्रत्युद् absetzen: प्रत्यवेतस्वराणां तु प्रत्युद्रह्मीयात् Lati. 7,8,1.

— समुद्द् ausheben, sublevare: समुद्द्रस्य (क्वर्धाने) प्रवर्तयेषुर्पया नीत्स-र्जिताम् ÇAT. Br. 3,5,3,17. ausgreisen, ausgassen: स्रय कृष्णाजिनं च पुष्क-रपणं च समुद्द्रस्थाति यानिर्वे पुष्करपणं यान्या तदेतः सिक्तं समुद्रुह्णाति ६. 4,3,6.

- उप 1) auffangen durch Unterhalten: र्सम् TS. 2,1,3,1. तस्याञ्ज-लिनी ब्रह्मक्त्याम्पागह्णात् 5,1,2. — 2) unterfassen, unterfangen; unterhalten, namentl. ein Gefäss um daraus zu trinken: उपयमन्त्रा Çat. Br. 14,2,1,27. Kâtu. Ça. 26,6,15. द्तिणोन सच्योपगृङ्गीतेन Âçv. Gaus. 4, 7. दशापवित्रम्पगृक्य क्लिंकोराति ÇAT. BR. 4,2,2,11. 3,7,4,6. 13,2,7,12. म्रा-स्यं Каты Ça. 6, 3, 31. 9,6,15. पात्रम् 9,4,24. म्रनुलेपनं नासिकयोर्माञ्चस्य च Pir. Grus. 2,6. उप ला देवा श्रेयभी समसेन व्रहस्पति: AV.7,110,3. Jmd unterfassen, von unten anfassen: भत्तार्मभिस्त्योपगृद्ध च । उत्सङ्गे शिर-म्राराप्य Siv.5,62. तवैव पादाव्यमृत्य R.2,27,21. उपमृत्य शिर्ग राज्ञ: 66, 2. 5,13,52. उपग्रह्मायतेत्त्रणाम् Brahma-P. 56,7. — 3) in den Besitz von Etwas gelangen, erlangen, theilhaft werden: माणिवर्मपगुरु R. 5,36,77. उपगृत्यास्परं चैव M. ७, १८४. स मृत्युमुपगृह्णाति गर्भमश्चतरी पद्या Kin. 19. MBu. 1,5623. 12,5277. Pankar. I, 415. II, 33. यस्मिन्कर्मसमवाधा यद्या येना-पगृह्यते। गुणाना गुणिना चैव BBAc. P. 2,8,14. — 4) sich Jmdes bemeistern: मडपगृक्तिताः spricht लोभ PRAB. 35,1. — 5) hinzuziehen, zu Hülse nehmen: तेजो वा म्रद्यो भूयस्तदा एतदापुम्पगृन्धाकाशमभितपति Kuind. Up. 7,11,1. — 6) धिया mit dem Geiste ersassen: श्ररविन्द्नाभम् । धियोपग्-ह्नन् Bula. P. 3,22,21. ohne धिया beschliessen: उपगुक्य त् बैराणि सा-ह्मपात्र MBu. 12,5206. — 7) annehmen, gutheissen MBu. 12,6977. — 8) st. उपगृक्तिम् Hir. II, 3 ist nicht mit den Herausgebern उपग्रहित्म् (eine falsche Form), sondern उपगृहित्म् zu lesen. - Vgl. उपग्रह, उ-प्रमङ्गा fgg.

— नि 1) niederhalten, senken: स्चम् Kats. Ça. 4,14,13. ता वामेन नि-गृह्य Gobu. 2,9,12. TS. 5,4,6,6 (s. u. उद्). einsenken: इन्द्र: सीता नि र्ग्-ह्नातु R.V. 4, 57, 7. — 2) an sich ziehen: उर्गास न्याम्ह्नीत Çat. Br. 3, 9, 4, 15. ड्येप्ट पुत्र निमृह्णान: Air. Br. 7, 15. TS. 6,5,1,3. Çar. Br. 11,5,3.2. शल्यम् Suça. 1,26,7. निगृन्धसामभीयवः Çla. 6,15, v. l. इषः पृतम्री नि-ग्रेने RV. 8,23,3. AV. 20,133,3. — 3) zusammenziehen, zukneifen (die Augen): नाय्रा ऽतिएा निग्ह्य (nachdem man ihm Staub in die Augen geworfen hatte) Mņkku. 33, 19. — 4) anhalten, zurückhalten: निगृह्णीय – क्यानेतान् – यात्रदेतं मे परमानयतामिक् мви. 3,2811. 5,7135. स वै प्रविशमानस्तु श्रुद्रेणान्धेन रिनिणा। निगृक्ति। वलाद्वारि ३,४०७६०. fg. 13. 2312. यस्य — निगृक्तितानि सर्वशः । इन्द्रियाणीन्द्रियार्वेभ्यः Buag. 2, 68. - 5) ergreisen: निगन्त पाणिना चापम् R. 3,30,34. (तम्) निजयाङ् भृजा-भ्याम् 5,61,14. (तम्) निजयाङ् केशपते DBAUP. 9,2. MBu. 1,4873.4982. 6000. fg. R. 3,24,22. 5,8,3. (चरकः) निगृक्तिः बांधरायां शिशृना — म्रस्-न्सयम्ब्रजोजक्त् Harry. 1138. निम्हीत्येन् die Kuh festhaltend Rage. 2. 33. — 6) ergreifen, gefangen nehmen, einfangen M. 8, 184.220. जीवबाहे